

आत्महत्या: एक जन स्वास्थ्य चिंता

आत्महत्या क्यों जन स्वास्थ्य का मुद्दा है?



आत्महत्या केवल आत्महत्या करने वाले व्यक्ति को प्रभावित नहीं करता है, बल्कि यह परिवार, समुदाय और समाज पर भी असर डालता है।



आत्महत्या का विचार लाने वाले या आत्महत्या की कोशिश करने के बाद बच गए लोग तथा आत्महत्या का विचार दोबारा लाने या दोबारा आत्महत्या की कोशिश करने से खुद को नहीं रोक पाने वाले लोगों को नुकसान से रोकने में प्रतिक्रिया देने की सेवा महत्वपूर्ण है।



भारत में होने वाली कुल आत्महत्या में से 50% मामलों में मानसिक बीमारी की कोई भूमिका नहीं होती। आंकड़े बताते हैं कि पेचीदा मनोसामाजिक पहलू जैसे जेंडर, जाति, विकलांगता, लैंगिक रुझान, सामाजिक स्थिति इत्यादि के चलते हाशिये पर धकेले जाने से खतरा बढ़ सकता है।

आत्महत्या रोकथाम के लिए जन स्वास्थ्य पद्धति क्या होगी?

आत्महत्या रोकथाम के लिए जन स्वास्थ्य पद्धति आत्महत्या के सामाजिक पहलुओं के समाधान, जोखिम तत्वों को कम करने और बहु-क्षेत्रीय साझेदारी के जरिए सुरक्षात्मक कारकों को बढ़ाने पर फोकस करती है।

यह पद्धति सभी साझेदारों जैसे आत्महत्या के सर्वाइवर, स्वास्थ्य व्यवस्था, सामुदायिक संगठन, शिक्षक, नीति निर्माता, पारम्परिक चिकित्सकों को एक साथ लाकर किफायती तरीके से आत्महत्या रोकथाम पर काम करने का अवसर तैयार करती है।

आत्महत्या रोकथाम में जन स्वास्थ्य प्रतिक्रिया के सबूत आधारित उदाहरण:

कीटनाशकों की नियंत्रित बिक्री व स्टोरेज के चलते श्रीलंका में कीटनाशक खाकर आत्महत्या के मामलों में कमी आई।

छात्रों के पहली परीक्षा में पास नहीं करने पर उसी साल पूरक बोर्ड परीक्षा देने की व्यवस्था शुरू की गई।

आत्महत्या रोकथाम में जन स्वास्थ्य प्रतिक्रिया के सबूत आधारित उदाहरण:



व्यक्तिगत (जैसे-समस्या के समाधान के कौशल को बढ़ाना)



संबंध (जैसे-प्रियजन को जागरूक करना)



समुदाय (जैसे-कीटनाशक जैसे आत्महत्या के माध्यमों तक पहुंच सीमित करना)



सामाजिक (जैसे-किसानों के लिए कर्जमाफी व दूसरे कल्याणकारी स्कीम)



प्रणालीगत (जैसे- राष्ट्रीय आत्महत्या रोकथाम नीति बनाना)